क. फूट का कारण बनने वाली समस्याएँ:

- **विभाजन और झगड़े**
  - कुरिन्थुस की कलीसिया में कौन-कौन से विभाजन थे? (1 कुरिन्थियों 1:12)
  - कुरिन्थुस में विभिन्न अगुए आए थे, और प्रत्येक विश्वासी का अपना पसंदीदा प्रचारक था (पौलुस, अपुल्लोस, पतरस आदि)। यह स्थिति इतनी बढ़ गई कि उनके बीच विवाद उत्पन्न होने लगे (1 कुरिन्थियों 1:11)।
  - वे यह समझ नहीं पाए कि वे सब एक ही संदेश का प्रचार कर रहे थे, और उन्होंने महत्वहीन बातों पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू कर दिया (1 कुरिन्थियों 3:5-8)।
  - धीरे-धीरे कलीसिया का जीवन प्रभावित होने लगा (1 कुरिन्थियों 3:3)। एकता की कमी ने प्रभु भोज के आयोजन को भी विकृत कर दिया (1 कुरिन्थियों 11:33), और वे एक-दूसरे के विरुद्ध न्यायालय में मुकदमे तक ले जाने लगे (1 कुरिन्थियों 6:1)।

ख. एकता बनाए रखने के उपाय:

- **यीशु में एकता**
  - "क्या मसीह बँट गया है? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या क्या तुमने पौलुस के नाम से बपतिस्मा लिया?" (1 कुरिन्थियों 1:13)। इन प्रश्नों के द्वारा पौलुस उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करना चाहता है।
  - एकता केवल तब प्राप्त की जा सकती है जब हम यीशु को अपना प्रभु मानें। एकता किसी भाई या बहन के विचारों या मतों का अनुसरण करने से, या छोटे-छोटे बंद समूह बनाने से प्राप्त नहीं होती।
  - परन्तु यीशु में एकता का अर्थ एकरूपता नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं कि हम सब हर विषय में एक जैसा सोचें, या हम सब एक ही प्रकार से कार्य करें।
  - मतभेदों की छोटी-छोटी बातें और प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग उपहार, जब मसीह पर केन्द्रित होते हैं, तो वे फूट उत्पन्न करने के बजाय एकता उत्पन्न करते हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-13, 25, 27)।
  - कलीसिया में सच्ची एकता केवल तब प्राप्त होती है जब हम स्वयं के लिए मरते हैं और यीशु के लिए जीते हैं।
- **बुद्धि और परिपक्वता**
  - पौलुस अपरिपक्व मसीहियों को "मसीह में बालक" और "शारीरिक" कहता है (1 कुरिन्थियों 3:1)। इस प्रकार के मसीही यीशु की अपेक्षा मनुष्यों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं।
  - जब कुछ अगुओं को दूसरों की अपेक्षा अनुचित रूप से अधिक महत्व दिया जाता है, तब ऐसे समूह बन जाते हैं जो कलीसिया में विभाजन उत्पन्न करते हैं। यह अपरिपक्वता का परिणाम है। इसलिए पौलुस हमें मसीह में परिपक्वता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है (1 कुरिन्थियों 2:6)।
  - *<u>अपरिपक्व:</u>* वे बच्चों के समान होते हैं (1 कुरिन्थियों 3:1); वे दूध पर निर्भर रहते हैं (1 कुरिन्थियों 3:2); वे शारीरिक होते हैं (1 कुरिन्थियों 3:3); वे दूसरों की राय से प्रभावित हो जाते हैं (1 कुरिन्थियों 3:4)
  - *<u>परिपक्व:</u>* वे वयस्क होते हैं (1 कुरिन्थियों 14:20); वे ठोस भोजन ग्रहण करते हैं (इब्रानियों 5:14); वे आत्मिक होते हैं (1 कुरिन्थियों 2:13); उनमें आत्मिक समझ और परख होती है (1 कुरिन्थियों 2:14)
- **सेवा और नम्रता**
  - जिस प्रकार आज लोग राजनीतिक, दार्शनिक, धार्मिक और अन्य विचारधाराओं के कारण विभाजित हैं, उसी प्रकार पहली शताब्दी में भी लोग विभाजित थे। हम इस प्रकार की सोच को कलीसिया में प्रवेश करने और विभाजन उत्पन्न करने से कैसे रोक सकते हैं?
  - अगुओं का दृष्टिकोण इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कलीसिया के अगुओं को अपनी भूमिका के विषय में स्पष्ट होना चाहिए कि वे केवल भण्डारी हैं। वे कलीसिया के स्वामी नहीं हैं; वे केवल मसीह की ओर से उसका प्रबंधन करते हैं।
  - कलीसिया का वास्तविक अगुवा यीशु है; अन्य सभी लोग "मसीह के सेवक" के रूप में उसकी अगुवाई करते हैं (1 कुरिन्थियों 4:1)।
  - जो सेवक प्रबंधन करता है, उसे अपने स्वामी के समान व्यवहार करना चाहिए: सदैव नम्रता के साथ स्वयं को दूसरों की सेवा के लिए समर्पित करने के लिए तैयार रहना चाहिए (फिलिप्पियों 2:3-8)।
  - यदि हर व्यक्ति — केवल अगुए ही नहीं, बल्कि कलीसिया का प्रत्येक सदस्य — इस प्रकार व्यवहार करे, तो कलीसिया में कितनी महान एकता होगी!
- **अगुओं के लिए सम्मान**
  - अगुओं के इर्द-गिर्द प्रतिस्पर्धा और गुटबाज़ी का अस्तित्व यह नहीं दर्शाता कि हमें उन्हें अस्वीकार कर देना चाहिए। इसके विपरीत, पौलुस ने अपुल्लोस की सेवकाई और कुरिन्थुस में उसके कार्य का समर्थन और बचाव किया (1 कुरिन्थियों 3:5-6; 4:6; 16:12)।
  - जब अगुए विश्वासयोग्य रूप से कार्य करते हैं, तो वे सम्मान के योग्य होते हैं (1 कुरिन्थियों 4:2; 1 तीमुथियुस 5:17)। परन्तु जब उन्हें वह सम्मान नहीं भी मिलता, तब भी वे विश्वासयोग्य बने रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उनका न्याय मनुष्य नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर करेगा (1 कुरिन्थियों 4:3-4)।
  - मसीही अगुए यीशु के पदचिन्हों पर चलते हैं, अपने भाइयों और बहनों के लिए दुःख सहने के लिए तैयार रहते हैं, और यदि आवश्यकता पड़े तो अपनी सेवकाई के लिए प्राण देने तक को भी तैयार रहते हैं (1 कुरिन्थियों 4:11-13; 2 कुरिन्थियों 11:23-28)।
  - न तो अगुओं को और न ही सदस्यों को आपस में लड़ने या विवाद करने के लिए बुलाया गया है, बल्कि उन्हें यीशु की स्तुति करने और क्रूस के संदेश का प्रचार करने में एकजुट होने के लिए बुलाया गया है।